# NEO CONVENT SR. SEC. SCHOOL

PASCHIM VIHAR, DELHI-65

# SPECTRUM

103RD EDITION APRIL - JULY 2019

KNOWLEDGE THY WEALTH

# SPECTRUM

Of the Neonians!
By the Neonians!
For the Neonians!

*Sky has no limits and so have been the achievements at NCS. Our board results recited the saga of our success. Our neonians made a mark in the field of sports also, specially Taekwondo and Cricket. All round development of our Neonians has been our first and foremost priority and we have been acquiring this at each and every step. With the summer vacations behind us, lets brace ourselves for the journey ahead with zeal and enthusiasm.*

## TEACHER FACILITATORS

Mr. Jagmohan Sharma, Ms. Kanchan Bhagat
Ms. Surbhi Hajela, Ms. Santosh, Ms. Rajneet
Mr. Mayank

**2nd Chaudhary Sher Singh Memorial Cricket Tournament at**
**NEO CONVENT SR. SEC. SCHOOL PASCHIM VIHAR,**
**SIX Teams Participated and Our school picked up**
**RUNNER- UP TROPHY. BEST BATSMAN AWARD**
**was bagged by the NEONIAN - JAYANT KUMAR of IX-A**

## TEAM NAMES

- HARDIK VII- A
- VIRAJ VIII- B
- SHAURYA VIII- B
- KRISH VIII- A
- PRASHANT VIII- C
- JAYANT KUMAR IX-A
- JAYANT MEHTA IX-A
- VIVEK KUMAR IX-A
- SAGAR X-A
- DAKSH MEHTA X-B
- AKSHAT X-C
- KUNAL X-C

# INTERACTION

International Taekwondo Kyorugi and Poomsae Championship was held at Phrentshaoling Olympic hall in Southern Bhutan from 25th Jan to 31st Jan 2019 under the auspices of the Bhutan Taekwondo Federation and Dzongkhag Taekwondo association. Three students participated in the championship and Dishita Gupta of II A won a gold and Japjot Singh and Rupinder singh of V A bagged silver medals under the guidance of coach Ms Manisha Rawat.

Open Delhi State Taekwondo Championship organized by Leo sports and Cultural society was held on 18th April, 2019 at Thyagraj Stadium. Total students who participated were 36 in which 10 students won gold medal, 11 students won silver medal and 15 students won bronze medal.

# UNSUNG HERO

Anand Kumar (born January 1,1973) is an Indian educationist and a Mathematician best known for his Super 30 programme, which he started in Patna, Bihar in 2002, and which coaches underprivileged students for IIT-JEE, the entrance examination for the Indian Institutes of Technology (IITs). By 2018, 422 out of the 480 had made it to the IITs. Kumar was born in Patna, Bihar, India. His father was a clerk in the postal department of India. His father could not afford private schooling for his children, While studying in Patna High School Patna, Bihar he developed his deep interest in mathematics. During graduation, Kumar submitted papers on number theory, which were published in Mathematical Spectrum and The Mathematical Gazette

Kumar secured admission to Cambridge University, but could not attend because of his father's death and his financial condition; Kumar would work on mathematics during day time and sell papads in evenings with his mother, who had started a business from home, to support her family. Kumar tutored students to earn extra funds.

In 1992, Kumar began teaching mathematics. He rented a classroom for Rs. 500 a month, and began his own institute, the Ramanujam School of Mathematics (RSM). Within the span of year, his class grew from two students to thirty-six, and after three years there were almost 500 students enrolled Then in early 2000, when a poor student came to him seeking coaching for IIT-JEE, who couldn't afford the annual admission fee due to poverty, Kumar was motivated to start the Super 30 programme in 2002, for which he is now well-known.

In March 2009, Discovery Channel broadcast a one-hour-long programme on Super 30, and half a page was devoted to Kumar in The New York Times. Actress and former Miss Japan Norika Fujiwara visited Patna to make a documentary on Kumar's initiatives. Kumar has been featured in programmes by the BBC. He has spoken about his experiences at Indian Institute of Management Ahmedabad, different IITs, University of British Columbia, Tokyo University and Stanford University. Kumar is in the Limca Book of Records (2009) for his contribution in helping poor students pass the IIT-JEE by providing them free coaching. Time magazine included Super 30 in the list of Best of Asia 2010. Kumar was awarded the S. Ramanujam Award for 2010 by the Institute for Research and Documentation in Social Sciences (IRDS) in July 2010.The list of the awards received by him goes on and on. His life and work are portrayed in the 2019 film, Super 30, where Kumar is played by Hrithik Roshan.

Kumar presented his biography to the Honourable President of India, Shri Pranab Mukherjee, which was written by Canada-based psychiatrist Biju Mathew. Anand Kumar was awarded "Rashtriya Bal Kalyan Award" by the president of India Ram Nath Kovind.

# माँ

नाम रोशन हो तो पिता सामने आते हैं,
कलंक लगे तो क्यों माँ पर लाँछन लगते हैं?
क्यों माँ को ही हम ताना देकर, बेज़्ज़त करते हैं?
क्यों माँ को ही हम बड़े होकर, एक बोझ की तरह समझते हैं?
माँ ने हमें पैदा किया,
माँ ने ही हम पर सबसे ज़्यादा विश्वास किया।
जिस माँ ने हमें प्यार दिया, अब हम उसी माँ को दुत्कार रहे।
उन्हें मार रहे तथा अपने ही घर से बाहर निकाल रहे।
ये कैसी पापी दुनिया है, विष से भी ज़्यादा जानलेवा।
समझाओ इस मानव को, कि
माँ की रक्षा करे, इज़्ज़त दे और उनसे प्यार करे।

याना मल्होत्रा– दसवीं 'स'

# मुस्कुराहट– बच्चे की

दुनिया बदल जाए अगर मुसकुरा दो तुम,
तेरी खूबसूरती में हो जाऊँ मैं गुम।
जब तुम खिलखिलाओं लगता है पा ली जन्नत,
सदा मुसकुराते रहो यही मेरी मन्नत।
जब तुम हँसो सब दुख मैं जाऊँ भूल, हँसते हुए लगते हो तुम एक सुंदर फूल।
जब हँसते हो लगता है चाँद हो, अपनी मुस्कान से मेरे दिल को बाँध दो।

जानवी अरोरा– दसवीं 'स'

# 'SHE'

BY: YUKTA DASS X-C

She is the most powerful
word I guess,
because she is the one
who manages all your mess.

She is your alarm clock
She is your chef,
And still you ignore her
Words like a deaf.

She taught you how to walk
She taught you how to write,
But now you will use those powers
Against her without fright.

She is your mentor
She is your guide,
And you must respect her
With all the pride.

She is your mother
She is your sister,
Or she is your wife
Who will help you glisten.

# SAVE GIRL CHILD

Save girl child, save girl child
By killing her don't be so wild
Let her come to this beautiful world
To create her own dream world

She should not be treated as a toy
She is superior to a boy
She is a Mother, Daughter, Sister and a wife
Let her live her own life

She is a treasure to a family
She wants to live her life happily
Save girl child, save girl child
By killing her don't be so wild

LAKSHAY GUPTA X-C

# `गीता सार – अध्याय दस
## "विभूति योग"

गीता सार के अन्तर्गत हमने पिछले नवें अध्याय में 'राजविद्या योग' के बारे में जाना। जिसमें भगवान श्रीकृष्ण ने अपने परम प्रिय शिष्य अर्जुन को श्रद्धा एवं भक्ति का ज्ञान दिया है।

गीता के दसवें अध्याय में हम जानेंगे भगवान की ऐश्वर्य पूर्ण योग–शक्ति।

भगवान श्रीकृष्ण अर्जुन से बोले – हे महाबाहु अर्जुन! तू मेरे परम–प्रभावशाली वचनों को फिर से सुन, क्योंकि मैं तुझे अत्यंत प्रिय मानता हूँ इसलिए तुम्हारे हित के लिए कहता हूँ। मेरे ऐश्वर्य के प्रभाव को आज तक कोई भी देवतागण और न ही महान ऋषि गण जान पाएँ हैं क्योंकि मैं ही सभी देवताओं व ऋषियों को उत्पन्न करने वाला हूँ। जो मनुष्य मेरे जन्म–मृत्यु रहित, आदि–अंत रहित और सभी लोकों का महान ईश्वरीय रूप को जान जाता है, वह मृत्यु को प्राप्त होने वाला मनुष्य मोह से मुक्त होकर सभी पापों से मुक्त हो जाता है।

हे अर्जुन! सशंय को मिटाने वाली बुद्धि, मोह से मुक्ति दिलाने वाला ज्ञान, क्षमा का भाव, सत्य का आवरण, इंद्रियों का नियंत्रण, मन की स्थिरता, सुख–दुख की अनुभूति, जन्म–मरण का कारण, भय–अभय की चिंता, अहिंसा का भाव, समानता का भाव, संतुष्ट होने का स्वभाव, तपस्या की भक्ति, दानशीलता का भाव और यश–अपयश की प्राप्ति में जो भी कारण होते हैं यह सभी मनुष्यों के अनेक प्रकार के भाव मुझसे ही उत्पन्न होते हैं। सातों महान ऋषि और उनसे उत्पन्न होने वाले चारों सनकादि कुमारों तथा स्वयंभू मनु आदि यह सभी मेरे मन की इच्छा–शक्ति से उत्पन्न हुए हैं, संसार के सभी लोकों के समस्त जीव इन्हीं की संतानें हैं। हे अर्जुन! जो मनुष्य मेरी इस विशेष ऐश्वर्य पूर्ण योग–शक्ति को तत्त्व सहित जानता है, वह स्थिर मन से मेरी भक्ति में स्थित हो जाता है इसमें किसी भी प्रकार का संदेह नहीं है।

श्रीकृष्ण अर्जुन को भक्ति–योग का फल बताते हुए बोले–हे पार्थ! मैं ही संपूर्ण जगत की उत्पत्ति का कारण हूँ, मुझसे ही संपूर्ण जगत की क्रियाशीलता है। इस प्रकार यह तथ्य मानकर विद्वान मनुष्य अत्यन्त भक्ति भाव से मेरा निरंतर स्मरण

करते हैं। जिन मनुष्यों के चित्त मुझमें स्थिर रहते हैं और जिन्होंने अपना जीवन मुझको ही समर्पित कर दिया है। वह मेरा ही गुणगान करते हुए निरंतर संतुष्ट रहकर मुझमें ही आनंद की प्राप्ति करते हैं। मैं उन भक्तों पर विशेष कृपा करने के लिए उनके हृदय में स्थित आत्मा के द्वारा उनके अज्ञान रूपी अंधकार को ज्ञान रूपी दीपक के प्रकाश से दूर करता हूँ।

ये बातें सुनकर अर्जुन बोले – हे माधव! आप परमेश्वर हैं, आप परब्रह्म हैं, आप परम–आश्रय दाता हैं, आप परम–शुद्ध चेतना हैं, आप शाश्वत पुरुष हैं, आप दिव्य हैं, आप अजन्में हैं, आप समस्त देवताओं के आदिदेव हैं और आप ही सर्वत्र व्याप्त हैं। हे कृष्ण! जो आप स्वयं मुझे बता रहे हैं यह तो सभी ऋषिगण, असित, देवता और व्यास तथा देवर्षि नारद भी कहते हैं। हे केशव! जो यह सब आप बता रहे हैं, मैं उसे पूर्ण–सत्य रूप से स्वीकार करता हूँ। हे प्रभु! आपके स्वरूप को न तो देवतागण और न ही असुरगण जान सकते हैं। मैं तो सिर्फ यह जानना चाहता हूँ कि क्या सिर्फ आप ही जान पाते हैं ? या फिर वह भी जान पाता है जिसकी अन्तर–आत्मा में प्रकट होकर आप अपना ज्ञान कराते हैं।

हे कृष्ण! कृपा करके आप अपने इन अलौकिक ऐश्वर्यपूर्ण स्वरूपों को विस्तार से कहिए जिसे कहने में केवल आप ही समर्थ है, जिन ऐश्वर्यों द्वारा आप इन सभी लोकों में व्याप्त होकर स्थित है। हे योगेश्वर! मैं किस प्रकार आपका निरंतर चिंतन करके आपको जान सकता हूँ और मैं आपके ईश्वरीय स्वरूप का किन–किन भावों से स्मरण करूँ ? हे जनार्दन! अपनी योग–शक्ति और अपने ऐश्वर्यपूर्ण रूपों को फिर भी विस्तार से कहिए, क्योंकि आपके अमृत स्वरूप वचनों को सुनते हुए भी मेरी तृप्ति नहीं हो रही है। कृष्ण बोले–हे अर्जुन! हाँ अब मैं तेरे लिए अपने मुख्य अलौकिक ऐश्वर्यपूर्ण रूपों को कहूँगा, क्योंकि मेरे विस्तार की कोई सीमा नहीं है। हे अर्जुन! मैं समस्त प्राणियों के हृदय में स्थित हूँ और मैं सभी प्राणियों की उत्पत्ति का, मैं सभी प्राणियों के जीवन का और मैं ही उनकी मृत्यु का कारण हूँ। मैं सभी आदित्यों में विष्णु हूँ, सभी ज्योतियों में प्रकाशमान सूर्य हूँ। सभी मरूतों में मरीचि नामक वायु हूँ और सभी नक्षत्रों में चंद्रमा हूँ, सभी वेदों में सामवेद, सभी देवताओं में मैं स्वर्ग का राजा इंद्र हूँ, इंद्रियों में मन और सभी प्राणियों में चेतना स्वरूप जीवन–शक्ति हूँ। मैं सभी रुद्रों में शिव हूँ, यक्षों व राक्षसों में धन का स्वामी कुबेर हूँ और सभी वस्तुओं में अग्नि हूँ, शिखरों में मेरु

हूँ। हे पार्थ! सभी पुरोहितों में मुख्य बृहस्पति व सेनानायकों में कार्तिकेय व सभी जलाशयों में समुद्र हूँ। मैं ही भृगु हूँ और वाणी में एक अक्षर हूँ। मैं ही यज्ञ हूँ और मैं ही हिमालय पर्वत। मैं सभी वृक्षों में पीपल, देवर्षियों में नारद और सभी सिद्ध पुरुषों में कपिल मुनि हूँ। मैं ही ऐरावत हाथी हूँ, हथियारों में वज्र हूँ, सभी गायों में सुरभि हूँ, मैं ही कामदेव हूँ। मैं ही शेषनाग हूँ, मैं ही प्रहलाद हूँ। मैं समय हूँ। पशुओं में सिंह हूँ और पक्षियों में गरुड़ हूँ। मैं सबसे श्रेष्ठ नदी गंगा हूँ।

हे अर्जुन! मैं ही समस्त सृष्टियों का आदि, मध्य और अंत हूँ, मैं सभी विद्याओं में ब्रह्मविद्या हूँ और तर्क करने वालों में निर्णायक सत्य हूँ। मैं सभी अक्षरों में ओंकार हूँ, सभी समासों में द्वंद्व हूँ और न कभी समाप्त होने वाला समय हूँ। मैं ही सभी को धारण करने वाला विराट रूप हूँ। मैं ही नष्ट करने वाली मृत्यु हूँ ,मैं ही सृष्टि हूँ , मैं ही कीर्ति ,सौन्दर्य, मधुरता , स्मरण शक्ति , बुद्धि , धारणा और क्षमा , सभी मैं हूँ।

हे अर्जुन! वह बीज भी मैं ही हूँ जिसके कारण सभी प्राणियों की उत्पत्ति होती हैं क्योंकि संसार में ऐसा कोई भी चर या अचर प्राणी नहीं, जो मेरे बिना अलग रह सके। हे पार्थ! मेरी लौकिक और अलौकिक ऐश्वर्यपूर्ण–स्वरूपों का अंत नहीं है, मैंने अपने इन ऐश्वर्यों का वर्णन तो तुम्हारे लिए संक्षिप्त रूप से कहा है। जो–जो ऐश्वर्ययुक्त, कांतियुक्त, और भक्तियुक्त वस्तुएँ हैं, उन–उन को तू मेरे तेज़ के अंश से उत्पन्न हुआ समझ। किंतु हे अर्जुन! तुझे इस प्रकार सारे ज्ञान को विस्तार से जानने की आवश्यकता ही क्या है, मैं तो अपने एक अंश मात्र से इस संपूर्ण ब्रह्माण्ड को धारण करके सर्वत्र स्थित रहता हूँ।

इस प्रकार उपनिषद् ब्रह्मविद्या तथा योगशास्त्र रूप श्रीमद्भगवद्गीता के श्रीकृष्ण–अर्जुन संवाद में 'विभूति–योग' नाम का दसवाँ अध्याय सम्पूर्ण हुआ।

।। हरि ओं तत् सत्।।

# जादुई किताब

बहुत समय पहले की बात है, तमिलनाडू के छोटे से गाँव में सरिता नाम की एक साधारण सी लड़की, अपने माँ और पिताजी के साथ एक झोंपड़ी में रहती थी। एक वक्त की रोटी खाने के लिए और अपने बूढ़े माँ–बाप की देखभाल करने के लिए उसे दिन–रात मेहनत करनी पड़ती थी परंतु सारा दिन काम करने के बाद भी उसके मुँह पर तेज साफ़ झलकता था तथा उसके कामों में उत्साह और फुरती की भी कमी नहीं थी। वह परिश्रमी और तीव्र बुद्धि की धनी थी। अपने साहस और बुद्धि के बल पर वह गाँववालों के दर्द को भी अपना दर्द समझकर उसका निदान करती थी इसलिए सभी उसको बहुत चाहते थे। एक दिन काम से लौटते वक्त उसे वृक्ष के नीचे एक किताब मिली, जिस पर लिखा था 'जादू का भंडार'। उसने किताब को उठाया और पन्ने पलटना शुरू कर दिया। पन्ने उलटते हुए उसे एक चित्र दिखाई दिया, उसने मन–ही–मन सोचा कि काश! मैं यहाँ जा सकती। उसके सोचने की देर थी कि पलक झपकते ही वह उस किताब में पहुँच गई। सरिता ने किताब का पहला पन्ना तो देखा ही नहीं था जिस पर बड़े–बड़े अक्षरों में लिखा था कि जो भी किताब में किसी चित्र को देखकर यह सोचेगा कि काश मैं वहाँ पहुँच जाऊँ, तो वह इंसान पलभर में वहाँ पहुँच जाएगा परंतु यह सब सरिता ने तब पढ़ा जब वह किताब के अंदर प्रवेश कर चुकी थी। अब उसे बाहर निकलने के लिए हर एक पन्ने में से होकर जाना पड़ेगा, जो इतना आसान न था। हर बार उसको तीन पहेलियाँ मिलेंगी, जिन्हें सरिता को सुलझाना होगा। उसके पास हर प्रश्न का उत्तर देने के लिए दो मौके होंगे यदि वह जवाब न दे सकी , तो उसे हमेशा के लिए किताब में ही रहना पड़ेगा। यह सब जानकर उसे ऐसा लगा कि मानो उसने बहुत बड़ी नासमझी कर दी है। उसकी पहली पहेली थी, "कटोरे पर कटोरा, बेटा बाप से भी गोरा"। यह पहेली पढ़ते ही उसके होश उड़ गए। उसने सोचा कि यदि उसने गलत जवाब दिया जो वह हमेशा के लिए किताब के अंदर ही रह जाएगी परंतु बहुत सोच–विचार के बाद उसे जवाब मिल गया। इसका जवाब है, 'नारियल'। यह पहेली पार करते ही उसके सामने दूसरी पहेली आ गई। वह पहेली थी, "एक ऐसी चीज़ का नाम बताओ जो हम खाने के लिए लेते हैं पर खाते नहीं"। बहुत परिश्रम और

सोच विचार के बाद उसने जवाब दिया परंतु इस बार उसका उत्तर गलत निकला। उसके पास अब केवल एक मौका था। उसने फिर से अपने दिमाग के घोड़े दौड़ाए और डरते हुए जवाब दिया, 'थाली'। इस बार सामने का द्वार खुल गया जो संकेत था कि उसने सही उत्तर दिया है। इस प्रकार आखरी पहेली सुलझाने का वक्त आ गया। वह पहेली थी, "ऐसी एक वस्तु का नाम बताओ जो आगे से भगवान द्वारा निर्मित है और पीछे से मनुष्य द्वारा"। उसने अपनी बुद्धि का प्रयोग किया और पलभर में उत्तर दिया, 'बैलगाड़ी'। इस पहेली का जवाब देते ही वह किताब से बाहर आ गई और उसे जादुई शक्ति भी प्राप्त हो गई। इस प्रकार वह एक जादूगरनी बन गई और जादू से उसने असहाय लोगों की भलाई का काम किया।

पलक मेहरा– नौवीं 'स'

# परिश्रम

श्रम की महानता पहचानो, अति मूल्यवान इसको मानो।
संपूर्ण धनों का यही साधन, इसका नित गुणगान करो।।
श्रमदान करो, श्रमदान करो।।
श्रम सुख–वैभव का है दाता, उज्ज्वल भविष्य का निर्माता।
सौभाग्य विधायक जन–जन का, तुम भी इसका सम्मान करो।।
श्रमदान करो, श्रमदान करो।।
श्रम से ही खेती लहराती, धरती है सोना उपजाती।
इसका संबल अपना करके, भारत को स्वर्ग समान करो।।
श्रमदान करो, श्रमदान करो।।
बाधाओं में भी मुस्काओ, नूतन विहान भू पर लाओ।
बुझने न पाए ज्योति श्रम की, इसका सदैव ही ध्यान करो।।
श्रमदान करो, श्रमदान करो।।

गौतम– नौवीं 'अ'

# TOPPERS OF CLASSES LKG TO IX AND XI

**JASKIRAT SINGH**
**LKG- B, I- POSITION**
**88.50%**

**ARSHIA ARORA**
**UKG- B, I- POSITION**
**90.46%**

**TANISHPREET KAUR**
**I- C, I- POSITION**
**97.49%**

**ASHITA**
**II- B, I- POSITION**
**94.91%**

**LAVANYA KUMAR**
**III- A, I- POSITION**
**97.48%**

**GAGANPREET KAUR**
**IV- B, I- POSITION**
**96.99%**

**SUYASH BHADWAJ**
**V- C, I- POSITION**
**96.03%**

**MANKIRAT KAUR**
**VI- A, I- POSITION**
**95.35%**

**CHANDEEP SINGH**
**VII- B, I- POSITION**
**93.28%**

**BHUMIKA MEHTA**
**VIII- A, I- POSITION**
**95.19%**

**MADHAV LUTHRA**
**IX- C, I- POSITION**
**93.9%**

**JASLEEN KAUR**
**XI- A, I- POSITION**
**78.20% (SCI STREAM)**

**SRISHTI VERMA**
**XI- B, I- POSITION**
**86.95% (COM STREAM)**

# CBSE RESULT 2018-19 CLASS- X

## NOTHING SUCCEEDS LIKE SUCCESS

*The Saga of Success Continues.... 2018-19*

CLASS-X$^{TH}$

95.8%
I$^{ST}$

BINWANT KAUR

CLASS-X$^{TH}$

95.2%
II$^{ND}$

PRIYANSHI BERA

CLASS-X$^{TH}$

94.4%
III$^{RD}$

PARNEET SINGH

**CONGRATULATIONS**

## MERIT HOLDERS OF 2018-19

## 100% MARKS IN FOUNDATION OF INFORMATION TECHNOLOGY

CLASS-X$^{TH}$

100% IN FIT

PARNEET SINGH

CLASS-X$^{TH}$

100% IN FIT

MANREET SINGH

CLASS-X$^{TH}$

100% IN FIT

NAMRATA

CLASS-X$^{TH}$

100% IN FIT

HASHMEET SINGH

**CONGRATULATIONS**

# CBSE RESULT 2018-19 CLASS- XII

## NOTHING SUCCEEDS LIKE SUCCESS

*The Saga of Success Continues.... 2018-19*

SCIENCE STREAM

95.4%
I^ST

DAVID DAHIYA

SCIENCE STREAM

95%
II^ND

SHIVAM BHATIA

SCIENCE STREAM

94.8%
III^RD

ISHIKA GULATI

**CONGRATULATIONS**

## NOTHING SUCCEEDS LIKE SUCCESS

*The Saga of Success Continues.... 2018-19*

COMMERCE STREAM

93.8%
I^ST

ROHIT VASHISTH

COMMERCE STREAM

93.4%
II^ND

GAURI BHATNAGAR

COMMERCE STREAM

92.8%
III^RD

TUSHAR SHARMA

**CONGRATULATIONS**

# FROM THE PARENTS' PEN

It was a wonderful session. We learnt about the child's nature at this age and how can we divert his energy in right direction. It was inspiring and knowledgeable. The golden words by the principal made us feel that our child is in the right hands.

Jaspreet Singh
LKG-A

I like and appreciate the way you conduct the interaction session. You gave us valuable instruction how to control the behaviour of our child. I will try my best to follow your instructions at home.

Prableen Kaur
LKG-B

The school discipline was good. The teachers told about telling stories and development a habit of reading books in children. I am really satisfied that my ward would be studying in a good environment.

Arshdeep Singh
LKG-C

The speech we have heard was clearly understood. The points I like the most were about how to manage the child properly and how the children should be treated by their Parents. I thank the teachers and the Principal for organising the interaction session

Pihu Arora
LKG-C

We would like to thank the management and teachers of school for inviting us on interaction session. It is our pleasure to attend the session. By attending this, We learnt a lot of things about the child development.

Shivaksh
LKG-C

It is a great interactive session organised by the school. Specially parenting tips given by the Dr. Madam. This will help us in successful parenting of our child.

Anirudh Arora
LKG-C

Being parents it was a wonderful session. It was a very helpful session for both of us. We both learnt importance of balancing between love and responsibilities towards child. Lots of small but yet very important issues were addressed. Teachers explained this year's action plan. Overall it was a great session. We request school authorities to arrange such sessions regularly in future to help us know about better Parenting.

REYANSH VOHRA
LKG C

Being a new parent of NCS it was my first interaction session which was a great experience and great learning for me. The information shared by the counsellor and the teachers was very nice and helpful for us . So many confusions were sorted out and was really impressed by the Principal's speech which was full of enthusiasm and motivation for all the Neo teachers as well as the parents. It feels great to be a part of NEO CONVENT SR. SEC. SCHOOL.

BISMUN SINGH
LKG-C

# NEO CLUB

READERS' HIVE CLUB

DRAMATICS CLUB

SCIENCE CLUB

COMMERCE CLUB

COMPUTER CLUB

SPIC AND SPAN CLUB

ENVIRONMENTAL CLUB